

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।



“स्पन्दन - कोंकणी साहित्याचे पुक्कळं”



केरळ कोंकणी अकादमी

कोच्ची

रुपया पाँच मात्र

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची

SPANDAN

Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com



खंड : 2 | अंक : 12 | 1934 भाद्रपद

मुखचित्र : "ओणपूक्कळम्"। ओणम - केरळान्तुले प्रधान आघोषु। सर्व जनय एकमेकीन सुखसमृद्धीन राबून आसील एक कालाचे उडगासु कोर्नु केरळचे जनानि पूरा लोकान्तु आचरण कोर्चे आघोषु। "पूक्कळम्" हो आचरणाचो भागु। ऐश्वर्याचे प्रतीक जाव्नु मानून घेत्ताय। (दृश्य - सुजित शेणै, कोच्ची)

लेखनान्तुली मतां त्या त्या बरोवप्याचीं

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

संपादकीय

तुमचे 'स्पन्दन' मासिकेक ह्ये अंकान दोन वर्ष पुर्ते जत्ता। कोंकणी प्रेम्यानी 'स्पन्दन' स्वीकार केल्लें म्हळेले कार्य आमका व्होडु सन्तोष दित्ता। सान चेर्डूवँ थाकून ज्ञानवृद्धजन थांय स्पन्दनारि बरेयताय। सान पुस्तक जाल्यारीयि एकेक म्हैन्याकय 20-25 जनाँक एकड कोरूक आमकाँ जत्ता। आनुकालिक खबरें, काणी, कविता, आत्मीय, पाचक, संगीत स्वरसुधा, अज्जेलीं ओकदाँ, आळें, भुर्ग्याली काणियों, स्मरण, चित्रकथा, रस्पति इत्याक सर्व विषयाँ पसूनूयिं स्पन्दनार वचूयात। केरळचे पूरा गाँवान्तुले बरोवपी - गोवा, मुम्बई, दिल्ली, षोलापूर, कारवार, बाँगळूर असी भारतान्तुले पूरा गाँवान्तुलेय बरोवपी आमचे लागी सहकार दित्ताय।

स्पन्दन, केरळ कोंकणी अकादमी, गोश्रीचैतन्य हाँचे सहकारान, गाँव गाँवान्तु कोंकणी पुस्तकाँचि प्रदर्शनी चमकेयता। जनाले आत्मार्थ सहकार आमकाँ मुक्कारि वच्चाक प्रचोदन दित्ता। आमकाँ विज्ञापन दीव्नु सहकार कोर्चे, प्रदर्शनी घडोवपाक सहाय कोर्चे, सर्वय स्पन्दनाले शुभकाँक्षी जनाँक आमचे धन्यवाद। मुक्कारीयि ह्यो सहकार आस्तलो म्हणु आमी विश्वासु पाँवताय।

खंचेय पुस्तकाचे फटिबल म्हळ्यार ताजे वाचपेली। ताँका इतुलेय धन्यवाद साँगल्यार नुपूरो। सर्वे कोंकणी प्रेम्यांक आमचो धन्यवाद। मुक्कारीयि सर्वांलोय सहकारु जाँव्का म्हणु मागूनु घेत्ताय।

कोच्ची, 01-09-2012 — सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

केरळचे भुर्ग्यांक खातीर, सुवर्णरेखा पब्लिक्केषन, कोच्चीनांत उजवाडाक हाळोलो "कोंकणी अक्षरमाला" म्हळेलो पुस्तक आगस्ट 5 तारिकेक प्रकाशन केलो। अक्षरमाला, मलयाळम आनी देवनागरी लिपीन बरेयला। शब्दय, मलयाळम अणकारय (चित्र सहित) आसा। हाँगा केरळचे जनांक व्होडु प्रयोजन मेळतोलो। पुस्तकाचे रचयिता आसा आर. एस. भास्कर।

केरळान्तु थाकूनु कोंकणीन्तुले प्रथम ब्लोग (Blog) देवल्याँ। आर. के. प्रकाश हांगेले कोंकणी कथा अनी कविता हान्तु वाचूक मेळता। "www.mallamam.in" ह्ये सैट्टारि तुमका ह्यें वाचूयात। आर. के. प्रकाशाक स्पन्दनाले अभिनन्दन।

केरळची आनन्दी माँयीले तीन ब्लोग आसा जल्यारीयि तें पूरा मुम्बई थाकून चालु आसा।

http://anandimumbai.blogspot.com

http://konkani-kaniyo-in-nagri.blogspot

http://konkani-kaniyo.blogspot.com (Malayalam Script)

डॉ. माधवी सरदेसायान बरयिल्ल्या "मंथन" पुस्तकाचे विमोचन फा. मोईझिन्य द आताईद हांचे हाथान गोवान्तु चमकीलें।

"कोडियाल खबर" हांची सामूहिक प्रवर्तनाक अस्सिल्ले सारस्वत युवा पुरस्कार - 2012 कोच्चीचे अनुग्रहा चारिटबल ट्रस्ट हाँका फाव जल्या।



Beta version of Konkani transliteration software released

Mangalore, 11 Aug 2012 : Five-different scripts for Konkani and four on board the Konkanverter - the first Konkani script conversion utility that was dedicated for universal use today. This sums up efforts by Team Vishwa Konkani at World Konkani Centre to bridge the script row and tear down walls that is keeping literature written in Devanagari, Romi, Kannada, Malayalam and Perso-Arabic from being read and appreciated by users of the other script.

This free to use beta version of the software can be accessed on www. konkanverter.com

The software has given the opportunity to bring four out of five different scripts used for the language on to a common platform and the fifth script - the Perso-Arabic script used extensively by the Navayaths of Bhatkal will be on board soon.

केरळचे बरोवप्याँ लगी

केरळ कोंकणी अकादमी प्रतिवर्ष "पंडरिनाथ भुवनेन्द्र पुरस्कार" दीन्नु एत्तायि। २०१२ चे पुरस्काराक लघु गद्य कृती पेटोन्नु दिंव्याक अपेक्षा करताय।

- केरळचे बरोवप्याँक तँ यें गद्य सर्त।
- काणी, नाटक, प्रबन्ध, यात्रा विवरण - इत्यादि २० पन्ना पसी (20 Full scap papers) चड जंव्या नज्ज।
- पन्नाचे एक भागान मात्र बोरोंव्का।
- बरोवप्यालें नाँव, पत्तो आदी वेगळेचि पन्नार बोरोंन्नु कृती लगि दवोर्का।
- कृती मेळका जल्लेली अंतिम तारिक - २०१२ सेप्तम्बर ३०.
- कृती देवनागरीन जांव्का बोरोंव्याक।
- पेटोन्नु दींव्का जल्लोलो पत्तो - श्री जी. मोहन रावु, सन्केतं, IX/ 1110 B, अजन्ता लेन, कोच्ची - २.

5-8-2012, मंगळूर - 'त्रिभाषा संगं' सी.डी. बस्तिवामन शेणै हान्त्रि उजवाडायलें। टागोर दास हान्त्रि बोरोव्नु संगीत दिल्लेले ह्यें तीन भाषेचे गीन्त एकडे केल्लेले - कोंकणी, कन्नड अनि मराठी।

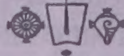


मडगाँव : नीला तेलांग हांगेले "शून्यतल्यान शून्याकडेन" (कविता समाहार) आनि किरण माम्ब्रे हांगेले "अनपेक्षित" (कथा समाहार) ये दोनि पुस्तकांचे प्रकाशन जल्या।



एळमक्करा श्री शंकर विद्यालयान चमकेयलेले जिल्लातला चित्ररचना सर्तेन्तु यू.पी. विभागान्तु प्रथम स्थान मेळ्ळेली कुमारि अक्षरा रमेश - फोर्टकोच्ची सेन्ट मेरीस ऑंग्लो इन्ड्यन स्कूळान्तु (पाँचवे क्लास) सिकता।

श्री वेंकटेश विजय



संक्षिप्त विवर्तन
डॉ. स्वर्णलता जी. पै, गोश्रीपुरं.

परमात्माले पायां थाकूनु भागीरथीलो उत्भवु जाल्लो। त्या नारायणालो पायु धुंवचाक भाग्य आकाशरायाक मेळ्ळे। मागिरी वस्त्राभरणानी जगन्मोहनाक मान दिल्लो। जो वेदाचो निर्मिता ताक्का रायु यज्ञोपवीत घालता। मुहूर्त समय लागी पांवचाक ओली धोर्नु पत्मावतीक मंडपांतु हाळ्ळी।

देवाचार्य (रायालो पुरोहितु) चेल्येले गोत्र उच्चार करता। अत्रिगोत्रांतु जाल्लेली - सुधर्माली प्रपौत्री, शुशर्मरायाली पौत्री, आकाशरायाली पुत्री पद्मावती नावाची कन्या स्वीकार करी नारायणा। मागिरी वरा कडे पुरोहित, वसिष्ठ, वराले गोत्र उच्चार करता। ययातिरायालो प्रपौत्रु, शूरसेन रायालो पौत्र, वसुदेवालो पुत्र वसिष्ठ गोत्रोत्पन्न श्री वेंकटेशनाम वर - हे म्होणु ओली दूर काडताई। मन्त्राक्षत घेव्नु जगन्नाथ पद्मावतीले मस्तकारी घालता आनी तिगेले मात्यारी आपण्यालो वरदहस्त दवर्ता। देव पुष्पवृष्टि करताई। सकडई अक्षत घालताई। वाद्य जोरारी वाज्जत जयजयकार घाल्लो। भांडरां थकून रायान हात भोर्नु ब्राह्मणांक दक्षिणा दिल्ली। वरदक्षिणा जाव्नु एक सुन्दर सुवर्णाचे किरीट वेंकटेशाक दित्ता। रत्नाभरण घाल्लेले घोडे, हस्ती आनी रथ, दास दासी दिल्ले। यथाविधि कन्यादान जात्तरि नारायणान आपण्याले हातान मंगलसूत्र बांधिलें। ("आत्महस्ते नारायणे मंगळसूत्र बांधिले".) मागिरी वधूवर लाजाहोमा लगी बेसून होम, सप्तपदी इत्यादि देवविधि शास्त्रप्रमाणे केल्ली। ते जत्तरी भंगरा माणायेरी सकडांक बेसोव्नु रंगोली घाल्नु, दिवली दोवोर्नु (रत्नमय) भांगरा वाठ्यांतु सकडांक वळ्ळे।

"जो जगदात्मा आदिनारायण तेथे कोणता पदार्थ नव्हे न्यून अष्टसिद्धी राबती पूर्ण हरिइच्छेकरुनिया।।"

"खंईकी जगदात्मा आदिनारायण आस्स थांगा खंचो पदार्थ उणे जायना। अष्टसिद्धि हरि इच्छेन थांगा राबतल्यो। ते देकुनु सर्व संतोषान जेवले। बायल्याल्या फांतींतु पद्मावती समेत सर्वोतम जेंवचा बेसलो। तांतु मुख्य बकुला, लक्ष्मी, सावित्री, पार्वती, गायत्री, सरस्वती, शची, आनी अरुंधती बेसल्यो। रुप्यापशी धवे शीत, भंगरावर्णा वरण (तोय), पांचतराचे परमान्न, साठी तरा रांदयों, केशर कस्तूरी युक्त मांडे, बूंदी, फेणोरी, मुळीक, जिलेबी, मोतीचूर उंडो, नानातराचे कोशिंबिर (Salad) तरातराचे पक्वान्न। ह्या रंदपा वर्णना कोणाकई कोरु जायना। (....शेष लगी अंकान्तु)

मायामाळवगौळाचे (जण्डवरिशकळाचे) मगिरचे स्वर

संगीत स्वर माधुरि - ८



आर. मोहन कम्मत, कोच्ची

15. ससस रिरिरि गग
सस रिरि गग मम
रिरिरि गगग मम
रिरि गग मम पप
गगग ममम पप
गग मम पप धध
ममम पपप धध
मम पप धध निनि

पपप धधध निनि
पप धध निनि सस
ससस निनिनि धध
सस निनि धध पप
निनिनि धधध पप
निनि धध पप मम

धधध पपप मम
धध पप मम गग
पपप ममम गग
पप मम गग रिरि
ममम गगग रिरि
मम गग रिरि सस

जोतें

- सुनील पालकार, नावशी, गोंय

तांकां हुलपतना पळेल्ले आजून जीते आसा
तांचें आनी आमचें अतुट नातें आसा

सतेज दोळ्यानी त्यां लखलखताले भाव
काळजानी तांचे स्थान वर्तें आसा

अणभवल्ले जाणां धगीच्यो असह्य वेधना
तें योगदान समाजाचें माथें आसा

काळ सरता तश्यो गळून पडटा यादि
काळाच्या पड्ड्याकूय अदृश्य बोंथे आसा

अनीती ब्रश्टाकारी सहज कोण सुटना
मड्डून पीठ करुंक संवसाराचें दातें आसा

सत्तेच्या आशिर्वादान नियम मोडले जायत्यानी
अन्यायाचेर म्होखून मारूंक पायांत जोतें आसा

आंग - ദേഹം - Body

- सैलेष कम्मत एम, कोच्ची

मुटु - മുട്ട് - Knee
सालि - തൊലി - Skin
दांतु - പല്ല് - Tooth
पावल - പാദം - Foot
हाड - എല്ല് - Bone
रगत - ചോര - Blood
बोंबूलि - നാഭി - Navel
फाटि - പുറം - Back
पोट - വയർ - Stomach

बालगीत अंबो - एंबो

- भक्ता आर. काञंगाड

गोड गोड अंबो
अंब्या रुकार एंबो
अंबो काडूं चडतना
एंबो चाबून खाता.

कौतुक लोकु

गणपति पणस



विघ्नविनाशक विनायकाले दीसु 'विनायक चतुर्थी' सकळे भारतान्तु आघोषान आचरण करताय। प्रकृती 'विनाचौवति' आघोष करपाचो एक नमूनो।

आभार - फेसबुक

कोंकणी मेजूक सिखूया

- ए. आर. प्रभु, कोच्ची

11 - इखरा	16 - सोळा
12 - बारा	17 - सत्तेरा
13 - तेरा	18 - आषा
14 - चौधा	19 - इक्कूणीस
15 - पन्नेरा	20 - वीस

*

मनीश - मशीन

(एकी कविता)

- एन. एन. अनन्दन, अंचिकमळ

मनीशान आतां मशीन केलें;
काम ताजान ऊणे जलें!
ई - बांकिंग आनी ई - बिसिनेस;
ई - पत्र आनी ई - पुस्तक;
ई - वाचप आनी ई - सीखवण;
ई - चलप आनी ई - बरवप;
ई - तान आनी ई - भूख;
ई - खाण आनी ई - जेवण;
ई - नीद आनी ई - जाग्रण;
काम जनांक ऊणे जालें;
ई - निमितान छी जालें !
मशीन आतां मनीश जालें !!
मशीन मात मनीश नात;
मशीन मात मनीश नात !!!



विधिचो विचित्र खेळु

- के. अनन्त भट्, कोच्ची



कोणाक कळता विधिचो विचित्र खेळु।
जाणतना-नेणतना भोगचाक मेळता, बरो-वाय्टु तो वेळु।।पल्लवी।।
एक भागाक तो व्हार्डिके मुहूर्तु, वत्ता व्हार्डिके होराण।
हेकडे-तेकडे मरणयि पावंता, रहस्य तें कोण जाण।।१।।
श्रीमंतु एकलो दुर्बळो दुसरो, जगांतु जीवन काडता।
प्रेमु अथवा द्वेष भावना, बरें-वाय्ट फल हाडता।।२।।
हांवयि-तूंवयि वेळा वशान्तु, जीवन यात्रा करताति।
भावी प्रबल ती समझले मानव, मनांतु धैर्य धरताति।।३।।

जीवन्मुक्ति

- वी. सुरेश शेणेय, कोच्ची

चिन्तन करिरे तूँ मनुष्या
चिन्तन करिरे तूँ
एक निमिषाक - एकाग्र जाव्नु
चिन्तन करिरे तूँ.

अवसूले गर्भान्तु जन्मु तूँ घेत्तलो
आनन्दान रोणु भूमीरि पावलो
आवसु-बप्पूले स्नेहान वड्डलो
आदर्श घेवनु लोकान्तु भोवलो.

इत्याक एयला सुन्दर लोकान्तु
सत्याक मोल ना मू ये लोकान्तु
धर्मु तो खाल कपट ये लोकान्तु
अधर्मु वाड्डता ये कलियुगान्तु.

सुखान अस्तना बान्धव तीं एत्ताय
हस्सूनु तुझेरि मोगु तीं करताय
दुःखान रडतना घूवनु तीं चोयनाय
हस्सूनु तुझेरि वायट मू हाडताय.

उलेयत्ताय सर्वय तीं तत्व-जल्यारि
कोर्चे तें तन्त्री अपूर्व
ना जत्ता तंचेरि मनुष्यत्व - तुक्का
फोन्डान्तु घल्तनि तीं व्यक्त.

जीवन कोरुक खर्यि तुक्का शक्ति
ये जीवितान्तु मेळना मू मुक्ति
भुन्जूनु भोव्लारि खंय तुक्का गति
कर्मान्तुलें भोगूचें तुग्गेलि विधि.



श्री शरतचंद्र शेणै विरचित अष्टोत्तरी

श्रीकृष्णकथासुधा

(श्लोक ८६ ते ९०)

इष्ट, बंधु आनी गुरुजनांक
मारचें कशी, कसल्याक वृथा ?
खेद विषाद जालो अर्जुनाक
बेसलो निर्जुळ पावनु व्यथा (८६)

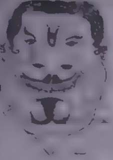
कृष्ण म्हण्टा - रे, धर्मयुद्ध हें
क्षात्रवीर तूं उठ धनुर्धरा
सोडी विचार दुर्बलतेचे,
उखल गांडीव शत्रुहरा (८७)

देव दिता तें ज्ञान सुयोग्य
विश्वरूप पळोवंचें भाग्य
पार्थ समजता दैवनिश्चित
कितें नश्वर, कितें शाश्वत (८८)

कसलेंच आयुध ना घेतलें
कृष्णान अत्भुत रचलेलें
आषा दिसांचें धर्मयुद्ध तें
घटिके घटिकेन घडयलेलें (८९)

सत्यधर्मांचे पांडवरक्षेक
पावलो सदा तो पावटी अनेक
वैष्णवास्त्र घेतलें हर्द्यारि
पुष्पहार तो जालो गळ्यारि (९०)

रस्वति - आर. के. प्रकाश, पक्कलूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc,
MBBS (3 times)

माधव : डॉक्टर, मिजे नंकाक प्रश्नु त! केन्नाय घाणि दिस्ता।

डॉक्टर - प्रश्नु ना, नांका खल्लाक कत्तो सरी आसाली मीशि पर घल्यारि पूरो! मगीरि परमोळु त आस्तलो।

* * * *

राजा : डॉक्टर, मृत्यु उपरान्ते हॉव खंचो जन्मु घेत्तोलो?

डॉक्टर - प्रश्नु ना, मुर्थमले जन्मान्तु आसीलेचि त तुक्का मेळूक साध्यता, गडव !

परणी म्हण्णी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

- हस्तेले न्हाण सी।
- अस्सुच्चे वेळार दोळ्याचे मोल कोळना।
- कासु दीन्नु लासु घेवप।
- कळकान्तु केल्लेले उजवाडान्तु एता।
- इष्ट नासल्लें बय्लेन कोर्चे सगटयि कष्ट। (वायट)

आळें (കടങ്കഥ / Riddles)

- के. पुरुषोत्तम पै, कोच्ची

मत्तेरि मर्लेरि जीब भायर कडता तें
दुसेरि मर्लेरि कडता भित्तेरि।
जाँवका जल्लेलें तें सर्वय संगता
जल्यारि शब्द तें काँय पुणि करना।
बन्धूले हर्देरि बेसून भोंवता तें
गाँव गावान्तु सर्वत्र भोवनु जावनु
विश्रमा वेळारि तोण्डाक तोपि घालनु
उल्लोवनत्तिलें तें पोडतेकडे
कोण ते म्होणु सांगाय बालानो
बुध्येन चिन्तन कोर्नु।।

डोटपेन

कान सोडून आयकाय [शर षटपदि]

- नागेश अणवेकर, कारवार

पर्तून पळेयायि चमकले वाट तीं
वर्तन बहलुक मार्गजत
कर्तांति चुकून अवगुण वाडतना
भोर्तलें जीवनान्तु अपकीर्ती
उत्राक मोलय चुकनाशि राकून
उत्तम मनुष्य नांव घेव्यां।

3/ तीनि - गोश्रीपुरं हरिकुमार, कोच्ची

दान दिंव्चे वेळार तीनि कार्य चोंव्का - देश, काल, पात्र
शरीराचे तीनि घट्ट - वाडि, सुस्थिति, क्षय
तीनि काल - भूत, वर्तमान, भावि

निस्सहाय

- कुमारि अञ्जली किणी, कोच्ची

वट्टेवेलान वत्ताय वाहन
वारां जल्लीं आठ जाव्नु बावन
राति जत्ता वेळु तव्वळि
दिक्कीलि हाँव दुःखाचि सावळि।

गय्यों रब्बिल्यांय भण्ड्येचे उंचार
अस्साय तीं धा-बारा सुमार।
हल्लूक तंका ना तन्तु स्थल
गोंटेरि बड्डी एकि घल्ता ती बल।

एकि गाय मक्का चोयता जल्ली
तोण्डारि चांग चैतन्य अस्सिल्ली।
दुःखान भर्लेले तिज्जे दोळे दिक्कूनु
व्हळ्ळे उद्दाक मेज्जे दोळ्यान्तु थकूनु।

चोव्नु तिज्जे तोण्डावेलो भावु
ती म्हणता मर्दीन जल्लो अणभवु।
"करि गो मेज्जे तू रक्षण,
लगि पवले मेज्जे ते मरण।

दीस दोनि जल्ले अस्स भुक्केन
रब्बूकेय जायना गो मक्का दुक्केन
मक्का आनी मेज्जे ह्ये बान्धवांक
व्हर्ताय हत्री अंचे जीव घेंचाक।

सन्त सन्त गोंटेरि सुरि झोरोव्नु
प्राण सोणु वच्चे भितरि रोडोव्नु
दुक्कोव्नु दुक्कोव्नु मारुक व्हरताय
चोयगो कस्सले दुष्कर्म करताय।"

दुष्टु तो मानवु दानवु जल्ला
पाप कोर्नु नाशु हाडूक सरला।
गाय ती अंका दूध दिंची आवसू
हरता मानवु तिग्गेलोय श्वासु।

कोणालि पुज्जा अमि करताय नित्य
तेचि हत्तान करताय तिज्जी हत्या
निर्दोष ते प्राण्याक कत्तरताय
निर्लेज्ज तिज्जे मांस भोर्नु खत्ताय।

ह्ये हांव आठोव्नु रब्बिल्ले वेळेरि
सरली ते दुष्टांलि भाण्डि मुक्कारि
निस्सहाय जाव्नु चोव्नु रब्बीली
नेण्तना पापाचे भागु हांव जल्ली।

चेर्डुवांलि चित्रँ

कुमारि ए. नन्दना, कोच्ची (9 वर्षं)
(श्रीमति अनि श्री. अजोय दयानन्द हांगेली सुपुत्री)





(चेर्डुवानि सोडवांचि
चित्रँ अम्मि हन्तु घलताति)

कुव्याँ पिट्टिये दुद्धळी

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय) - पत्मजा कामत, दिल्ली

सामग्री

1. कुव्याँ पिट्टी	1 कप	4. नर्ला सोई	¼ कप
2. दूध	1 कप	5. एळु	3 सांग
3. पयंदार (शक्कर)	1 कप	6. तूप	2 चिपट

प्रथमचि, कुव्याँ पिट्टी सेळ उदकान्तु पन्नेरा मिनिटांक घालनु सोडका। नन्तर चांग प्रमाणी वाळाव्नु लुगटान्तु / चाळिन्तु घाळनु काडका। रेंव, सल्ली कुटूके या इतरवस्तु पिट्टीयांतु थक्कून पेल्याँ घालूक त् ये घाळावप। शुद्धि केल्लेली यी पिट्टी दुस्सेरीय उदकान्तु घालनु धा-पन्नेरा मिनिटांक सोडका। जत्तना वाळाव्नु निवाळून उदाक पेल्ल्यान घालका। अस्सि तीन-चार फन्ता पिट्टी निवळावून शुद्धि कोर्नु काडका। पिट्टीये मत्त (चवर्प) पेल्याँ घालूक त् यी प्रक्रिया।

शुद्धि कोर्नु जल्लेली पिट्टी दूध अनि शक्कर मेळोव्नु सिज्जोव्का। सिज्जोव्नु सुक्के पीट जत्तना नर्ला सोई तन्तु मेळोंवका (पीट सुक्के जत्तना एक चिपट तूप मेळोव्नु चाळायता रब्बूका (पीट कोर्पूनत्तिलें रबूक)। एक वट्याक तूप सारोव्नु तन्तु पीट घालनु पतलांव्का। एळा साँग पिट्टी कोर्नु अज्जे उंच्यारी घालका। नीव्नु जत्तरी कुटके कोर्नु खवचांक काडयात।

भारी प्रयत्नु अस्सिले जल्यारि अति स्वादिष्ट अनि आरोग्यप्रद जाव्नु अस्सिले एक उत्तम विभव त् ये।

औषद पंक्ति - 7

अज्जेली वोक्कदा (मुत्तशिश वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

स्थनांक दूद जवंचे खातीरीय, गर्भावस्थेरी चेरडाले जनना समयारी सग्ग एवंचें आरोग्या नष्ट परिहरण कोर्नु, बाळांतीलें आरोग्य पूर्वाधिक चांग रुपान राखुच्वे बगेकय सग्ग जाव्नु तां ही बाळांती शुश्रूषा. कोड्या न्हाण नत्तिले दिस्सा ताळूव भरी तेल घालनु, केस्सांक, मत्या करडीक तेल पुस्सूनु न्हाणवप. दशमूलारिष्ट, मुस्तारिष्ट, जीरकारिष्ट इत्यादी अरिष्टंय, विदार्यादी, च्यवनप्राश, कूशमाण्ड रसायन इत्यादी लेह्येय बाळांतीक दीवप. सग्ग जाव्नु तीन मास पर्यन्त ही बाळांती - शुश्रूषा चमकतली. हाजान करतना ती पूर्ण आरोग्यवंती जात्तली.

(....शेष लगी अंकान्तु)

उखलापी जीण

- इंन्द्रजित गणपत घूले, सोलापूर

मनभुलोवण्या घसघशालगी बसून
ओडलायणे सैमाचे सुंदर रूप
नदरेन नियाळता
स्वताक विसरुन
जीणेचो सर्ग
मनांत सांबाळून दवरता.
हो नाद नाच आनी
खळखळाट
फुलापानांचो रंगयाळो
लखलखाट.
उखलापी जीव्याक
पाचव्याचार सुखाच्या
दवरण्यार दवरता
जीवाक सू जाता.

सांजेर सवणीं घोटेरांत
फुलां पानांत लिपून
सुरोगाद
म्हाळा मात आता
घरां वचूंक नज.

मनीस

- स्मिता संतोष गांवकर, केपें-गोंय

मनीस असो एक प्राणी
ताका समजून घेवप कठीण
तकलेंत सदां विचारमंथन
तुफानांचे गतीन

सांगत वतलो तत्वज्ञानां
संध मेळटा थंय
त्या तत्वांचें कर्तव्य पालन
आपले कुळयेक न्हय

आरते आशिल्लें परतुंकय
ज्युस्त ताका कळटा
मोह आनी लोभी वृत्तीचे
कांय-कांय पावटी जळटा

केन्ना कोणाची धुंवत मती
कशेंच जायना सागूंक
भखंराचें चिलकत धातलें
तरी मुश्कील जगुंक

केरळ-कर्नाटक कोंकणी

- गुरुदत्त एस. प्रभु, कोच्ची

सबाव पळ्ळेली - अस्सीन्चि आड सर्लेलि
सबाव गोन्दोळु करता - नुस्तीन्चि गौजि घालता
सबाव अग्लोलो - अस्सीन्चि अग्लोलो
सबाव रोण्णक्का - नुस्तीन्चि रडशी
टुक्ळि सोडतोलो - बोडारि दित्तलो
गोंवटेक धोर्नु चिर्डप - गळ्याक गच्छी दीवप

आत्मीय

भोवरु एकेक फुल्लान्तु थकूनूय ऊणे ऊणे म्होवु पित्तलो। म्होवु मात्र पित्तलो। तस्सींचि सग शास्त्रान्तु थकूनु सत्त मात्र अम्मि स्वीकारु कोर्का म्होणु हों दकैता।

बावल्या काणी

(लोक काणी)

- स्व. वत्सला आर. शेणै, पळ्ळूर



एकडे एकु रायु आनीक तागेली राणी आशिल्लीं. तांगेली व्हारडीक जाव्नु मस्त वर्षां जाल्लीं जाल्यारीय तांकां चेरडूवां जाल्लींनाय.

रायान जायते होम, पूजा सगट केल्लें. मागीर तांगेले कुटुंबपुरोहितान सांगून पुत्रकामेष्टी यागु पर्यान करयलो. जाल्यारीय चेरडुवां जायनाय.

राणी सदांच तांगेले कुलदेवी देवळांतु वोचून भोजून येतली. राणीयेचे ओटू तिजी एकि विश्वस्त दासीत वतली. राणियेलें दुख दिकून दासीक सहन करूक जायना.

राणियेक दुखांत साकून सुंटोंवचाक इत्ती कि वाट म्होणु दासीन आलोचना केल्ली. तिका एकि बुद्धी दिसली. हेरदूसा तीणे गोवा पीट कालोव्नु ताजान एक चेल्या चेरडा रूप केल्लें. तें तुपांतु तोळनु काडलें आनी पैंदारेचे पांकांतु घाल्लें. सांजे राणियेचे ओटू देवळान्तु वचे वेळार मोगर्यामाळा, चांप्या माळा सग व्होरचे भरसी तें बावलेंय दवरलें. फुला माळा दुर्गादेवीले गोमटेक घाली. नीवेदु म्होणु बावलें पोळेरांतु दवोरनु देवीचे मुकार दवरलें.

पूजा जावनु लोकु सगट तांग तांगेले घरकडे गेल्ले. राणियेक व्होरनु रावळारांतूय सोडली. आनीक दासी देवळांतु निपून चडली. देवीले बिंबा मागल्यान नुतोच निपून बेसली.

राती जांवचानीक निवद्याक दवरलेल्याचो घमघम देवीले नांकांतु पावलो. देवीक ते बावल्याक खायीन म्होणू दिसलें. देवी अशीय तशीय चोयली. कोण ना म्होणु दिकून बावल्याक खेल्लो. खावनु जांवचानिक दासीन देवीले हाताक चोणू धरलो. "देवी, मिगेले चेल्याक तूंवें खेल्लो. होगी मिगेले चेल्याक परतून दी !" अशी तीणे देवीचे लागी होडान गौजां घालनु सांगूक आरांभीलें.

देवीक भय जालें. आनी इत्तें कि करप? देवीन होगी दासीले पोळेरांतु एक चंद चेल्या चेरडाक दवोरनु दिल्लो. वेगळी वाट आसा वे? गोंदोळु आयकून गांवकारां पांवचे भुरथम चेल्याकय घेवनु दासीक पेटेयली. दासीन संतोषान चेरडाक व्होरनु राणियेक दिल्लें. रायाक आनी राणियेक जाल्लेले संतोषाक लेक ना. तानी दासीक साबार द्रव्य दीवनु उपकार सांगीलो.



जी. कमलम्माळ

- पय्यनूर रमेश पै

केरळांतलें कोंकणी साहित्यांत अत्यंत उज्वल एक नांव आसा जी. कमलम्माळ हिगेलें. ओवि रामायणाची लेखिका म्हूण विख्यात विद्वांस जुसे पिरेर हांणी आपणालें 'लिटेररी कोंकणी - ए ब्रीफ हिस्टरी' ह्या पुस्तकांत तिजी परामर्श केल्या.

तिरुवल्ला गांवांत 1902-त जल्माक आयिल्ली तिका ल्हान प्रायेरीच व्हारडीक करून अंबलपळे ह्या गांवांत राबूका जालें. पुस्तकांचेर - विशिष्या पुराणांचेर - तिका भारी प्रीति आशीली आनी अनुवाचन तिगेली प्रीतिची संवय आशीली. बापूस गोविंद शेणै आनी बामूण सुब्राय पै हांगेलो प्रोत्साह मेळेल्यान तिका आपणालें "रघु रामायण" कोंकणींत बरोवंक जालें आनी मलयाळम लिपीन ताजो पयलो भाग "बालकांड" 1929-त छापून उजवाडावंक साध्य जालें. 28 पानांचें ह्या पुस्तकाक वकील ए. राम पैन प्रस्तावना बरयिल्ली. तांतु ताणे कमलम्माळाल्या साहित्यिक वाव्रा विशीं खूब तोखणाय केल्या.

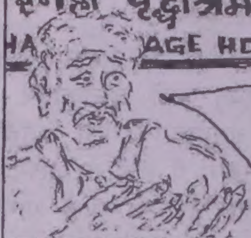
उत्तर रामायण सहित रघुरामायण तीणे 1940 भितर पुरतें केलें तरीय तें उजवाडावंक खूब कळाव जालो. तिगेली कृती केरळाक सीमित जावचें न्हय म्हणु समझून घेवनु केरळ कोंकणी अकादमीन 1980-त मलयाळमांतल्यान देवनागरीक लिप्यंतर करून भायर काळ्ळें. कोंकणींत प्रचारांत आसूचें वेकटेश कल्याण आनी शोभाने गीत रागान कशी म्हणतात तशीच रघुरामायणाचेंय गायन सुश्राव्य जावनु करयेत. इतर भाशेची काव्यशैली अनुकरण करनातिल्लें आपणाली अस्मिताय तीणे निर्माण केली.

1978 वर्सा कोच्चींत जमिल्या अखिल भारतीय कोंकणी साहित्य परिशदेन तिजो भौमान केलो. 'सुशीलन' ह्या नांवाची दुसरी एक कृतीयि तीणें बरयल्या, पुण ती मलयाळम भासेंत आसा. 'पात्रचरितम" तिगेले अनियेक कोंकणी पुस्तक.

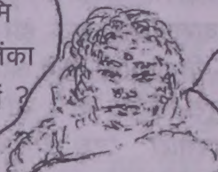
81 वर्साच्या जीणेचें आखेर ती 1983-त ह्या संसारांतल्यान मुक्ति पावली. शिक्षणा वाटेन महत्वाची साधना करूंक भाग्य मेळनातिल्या बायलांक कमलाम्माळाल्या रघुरामायणा वाटेन रामकाव्याची बरी वळख जाता. सर्वसामान्य लोकांक समझूचे तसले सरळ शब्द प्रयोग आनी धाटी उपयोग केलेल्यान रघुरामायणाक केन्नाय मोल आसतलें. तशें जावन समग्र कोंकणी साहित्याक कमलम्माळालें योगदान खूब महत्वाचें आसा.

वेळु, स्नेहु नत्तिलो लोकु

गोश्रीपुरं हरिकुमार



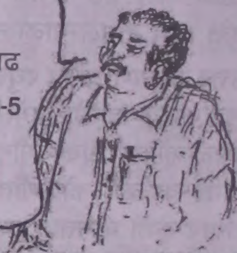
अम्मि अस्सि वें तंका वड्डेय्लेलीं ?



इत्तूले दुद्ढ तंगेले बगेक चेलव (खर्चु) कोर्नु अंका यी गति।

स्नेहा वृद्धाश्रम।

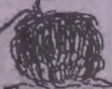
तुम्चेर स्नेहान न्हय्वें हंगा हाणु रब्बेला ! तुम्हीं तंगेले बगेक (खातिर) खर्चु केल्लेला पस्सी चढ तीं तुम्गेले बगेक खर्चु कर्तातिं म्हूँ। प्रति एकलाक 3-5 लक्षु तँ तन्नि भरला। तुम्हीं तंगेले बगेक केल्लोलो खर्चु कितलो ?



Cradle	-	10,000
Day Care	-	15,000
Pre K.G.	-	15,000
L.K.G.	-	20,000
U.K.G.	-	20,000
--------	-	------------
--------	-	------------
--------	-	------------

तन्नि सान अस्सिले वेळार तुम्का वेळु ना। अतँ तंका वेळु ना। इत्तें करप?

एदी जन चेर्डुवांक चोंव्चाक "आयाक" (चेर्डा चोंव्ची) रबेय्ताय। तेचिवरी तन्नि (चेर्डुंव) आवसु - बप्प्सूक प्राय जत्तना "नर्साक" (Home Nurse) रबोव्नु सेवा-शुश्रूषा करेतातिं। तन्नि कोर्चि चूकि वे ? संगाय तंकाय (तुम्गेलावरी) तंगतंगेले काम ना वे ?



!!! वोय्लेले न्हय्वें किर्लेतले !!!

Rs. 5/- SPANDAN 10th September 2012
Vol. No. 2 Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI Issue No. 12

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph : 2350960 and Published at 8/28, Santheri,1st Floor,Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682002. Editor - Suresh A. Shenoi